UGC Approved Journal
Research Link

Since March 2002

An International, Registered & Referred Monthly Journal : **Music**

Research Link - 165, Vol - XVI (10), December - 2017, Page No. 128-130

ISSN - 0973-1628 ■ RNI - MPHIN-2002-7041 ■ Impact Factor - 2015 - 2.782

भारतीय संगीत के प्रचार-प्रसार में तानसेन समारोह की भूमिका

प्रस्तुत शोधपत्र में भारतीय संगीत के प्रचार-प्रसार में तानसेन समारोह की भूमिका पर विस्तार से अध्ययन व विश्लेषण किया गया है। तानसेन समारोह वर्ष 2015 तक चार दिन आयोजित होता था, परंतु 2016 से यह पाँच दिन आयोजित किया जाने लगा है। इसमें पश्चिमी पारंपरिक संगीत का समावेश करते हुए ''विश्व संगीत समागम तानसेन समारोह'' कर दिया गया है। समारोह में देश के सभी घरानेदार तथा उत्तर एवं दक्षिण भारतीय संगीत के कलाकारों के साथ गत वर्ष से अंतर्राष्ट्रीय कलाकारों को भी अपनी कला प्रस्तुति के लिए आमंत्रित किया जाने लगा है, यह एक अच्छी परंपरा की शुरुआत है। इससे विभिन्न देशों के संगीत को जानने व समझने का अवसर प्राप्त होगा। परस्पर देशों में संगीत कला का आदान-प्रदान होगा तथा संगीत का प्रचार-प्रसार भारतवर्ष के साथ ही अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी होगा।

डॉ.वीना शर्मा

भारत की पावन भूमि पर अनेक संगीतज्ञों ने जन्म लिया उनमें से एक अनमोल रत्न महान संगीतज्ञ तानसेन हुए। उन्होंने अपनी निरन्तर साधना, तपस्या, सृजनात्मक क्षमता, अभूतपूर्व कौशल तथा पूर्ण समर्पण की भावना से संगीत को संरक्षित, संवर्धित, उन्नतिशील एवं समृद्धशाली बनाने में अभूतपूर्व भूमिका निभाई। नाद ब्रह्म के उपासक सम्राट तानसेन का जन्म ग्वालियर से लगभग 7 किलोमीटर दूर बेहट ग्राम में मोहम्मद गौस के आशीर्वाद के फलस्वरूप मकरन्द पांडे के पुत्र रत्न के रूप में हुआ। उनका असली नाम तन्ना था। तानसेन बचपन से ही नटखट थे तथा पशु पक्षियों की बोलियों की नकल करने की उनमे अलौकिक प्रतिभा थी। उनके पिता पुजारी एवं संगीत विधा के जानकार थे। उनके पिता मकरंद पांडे ने उन्हें संगीत की प्रारंभिक शिक्षा दी। इसके पश्चात् तानसेन ने राजा मानसिह तोमर द्वारा ग्वालियर में स्थापित संगीत विद्यालय में संगीताचार्यों द्वारा संगीत की शिक्षा प्राप्त की। तदुपरान्त वृन्दावन के स्वामी हरिदास जी के सान्निध्य में रहकर शिक्षा ग्रहण की।

स्वामी हरिदास से संगीत की शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् वे ग्वालियर लौट आये और संगीत की साधना निरन्तर करते रहे।

सम्राट तानसेन ने भारत में उच्चकोटि के कलाकार के रूप में प्रतिष्ठा ही नहीं प्राप्त की बल्कि वे एक कुशल रचनाकार भी थे। उन्होंने सहस्त्रों ध्रुपदों की रचना कर हिन्दुस्तानी संगीत को समृद्ध किया। भारतीय संगीत में उनकी गणना उच्चकोटि के ध्रुपद गायकों में की जाती है। तानसेन द्वारा रचित ध्रुपद शैली की रचनायें विष्णुपद मन्दिरों में भक्ति के माध्यम से प्रचारित हुईं। उनके द्वारा रचित ध्रुपद शैली का प्रचार व प्रसार केवल ग्वालियर में ही नहीं बल्कि सभी प्रांतों में हुआ। उनके द्वारा रचित ध्रुपद इतने लोकप्रिय हुए कि वे आज भी गायकों द्वारा गाये जा रहे हैं।

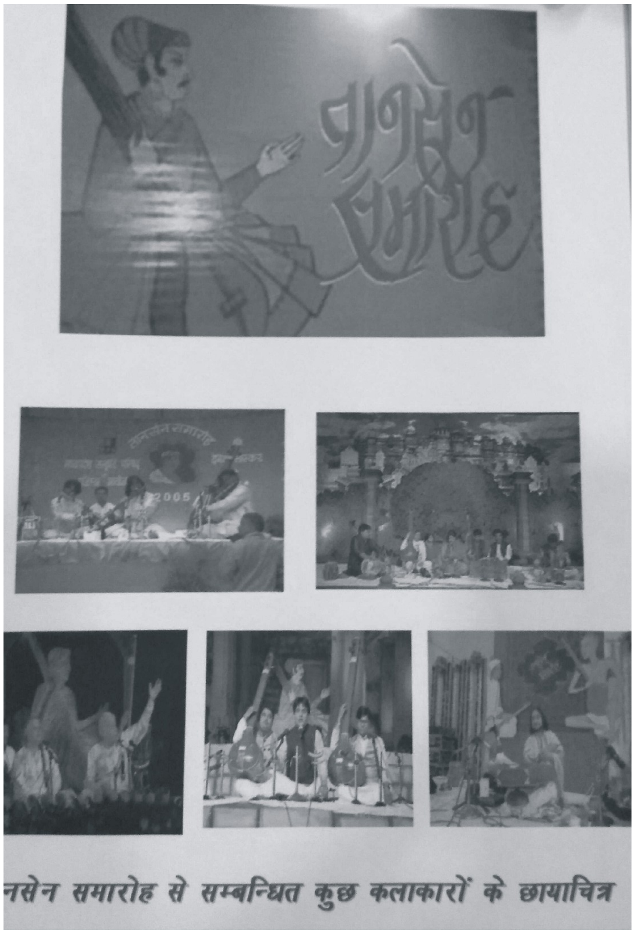

उनके ध्रुपदों से उनके समय के संगीत की जानकारी मिलती है। सम्राट तानसेन ने कई रागों की रचना, की जिनमें ''दरबारी

अतिथि प्रवक्ता, इलाहाबाद डिग्री कॉलेज, इलाहाबाद (उत्तरप्रदेश)

कान्हड़ा, मियाँ की तोड़ी, मियाँ की सारंग गुर्जरी तोड़ी तथा मल्हार राग मुख्य हैं। तानसेन ने सुरबहार नामक तंत्रवाद्य का आविष्कार वीणा और सितार के आधार पर किया तथा वीणा के आधार पर ही उन्होंने रवाब नामक वाद्य का आविष्कार किया। इसके अतिरिक्त इन्होंने संगीत सार, रागमाला, तथा गणेश स्त्रोत नामक ग्रन्थ की रचना की। इस प्रकार वे प्रयोगात्मक ही नहीं बल्कि शास्त्र पक्ष के भी ज्ञाता थे।

तानसेन की ख्याति एक मूर्धन्य गायक के रूप में सम्पूर्ण भारत में थी अतः सर्वप्रथम तानसेन शहंशाह सूरी के पुत्र दौलत खाँ के राज्यकाल में संगीतज्ञ थे। उसके पश्चात् रीवाँ के राजा रामचन्द्र के दरबारी गायक नियुक्त हुए। सम्राट अकबर ने उनकी गायन की प्रशंसा सुनकर अपने राज्याश्रय में गायक के रूप में उन्हें नियुक्त किया तथा नवरत्नों में शामिल किया। तानसेन ने अपनी संगीत साधना से स्वरों की सिद्धि करते हुए राग के गायन द्वारा अत्यन्त चमत्कारपूर्ण प्रदर्शन किया। उनके द्वारा गाये गये दीपक राग के गायन से बुझे दीपक का जल जाना तथा उस राग के प्रभाव से वातावरण में चारों ओर गर्मी उत्पन्न होना तत्पश्चात् उनकी पुत्री द्वारा मेघ राग के गायन से जलवृष्टि द्वारा उस अग्नि को शांत करना तथा राग मल्हार के गायन से बादल घिर जाना, आदि तानसेन की अटूट संगीत साधना की पराकाष्ठा के परिचायक हैं। इस प्रकार तानसेन ने शास्त्रीय संगीत को उच्च शिखर तक पहुँचाने में अपना संपूर्ण जीवन समर्पित किया। उन्होंने संगीत की साधना केवल संगीत के लिए की, संगीतमय होकर रहे, संगीत में ही जिये और संगीत में ही उनका विलय हुआ। तानसेन को संगीत का पर्याय कहा जाय तो अतिशयोक्ति न होगी। उनका संगीत मनुष्यों के अतिरिक्त प्रकृति को भी प्रभावित करता था। अब्दुल रहीम खानखाना ने तानसेन की कला की प्रशंसा इस प्रकार की है :

''विधना यह जिय जान कै, शेषहिं दिए न कान
धरा मेरु सब डोलते, तानसेन की तान''।

सहसरस के अनुसार ''तानसेन का कंठ स्वर अत्यन्त पुष्ट और पाटदार था''। स्वर और वाणी की देवी सरस्वती हैं। तानसेन उस वाणी के विलास थे, जो उनके कंठ का आभरण थी। अतः अकबर ने उन्हें ''कण्ठाभरण वाणी विलास'' की उपाधि से विभूषित किया था। वे मूर्च्छना पद्धति के भी कुशल ज्ञाता थे और मुकाम पद्धति के भी। अपनी असाधारण संगीत प्रतिभा से संगीत कला को उच्च शिखर तक ले जाने वाले विलक्षण प्रतिभा के धनी सरस्वती पुत्र महान गायक तानसेन के कृतित्व को जनमानस के समक्ष उजागर करने एवं संगीत का प्रसार–प्रसार करने के लिए उनकी स्मृति में ग्वालियर स्थित हजीरा में उनकी समाधि स्थल पर प्रतिवर्ष तानसेन समारोह आयोजित किया जाता है।

देश में आयोजित होने वाले अनेक समारोहों में तानसेन समारोह अपनी लोकप्रियता, ख्याति, भव्यता एवं सुव्यवस्थाओं के लिए अग्रणी है। यह समारोह सन् 1930 से प्रतिवर्ष दिसम्बर माह में आयोजित किया जाता है। यह प्रारंभ में तानसेन समारोह मूलतः एक संगीत उत्सव था लेकिन सन् 1952 और 1962 के बीच भारत सरकार के प्रसारण मंत्री श्री बी0 वी0 केसकर के सद्प्रयास से इसका आयोजन विस्तृत रूप से किया जाने लगा और तानसेन समारोह एक लोकप्रिय राष्ट्रीय संगीत उत्सव के रूप में मनाया जाने लगा। इस समारोह का आयोजन 1950 से प्रतिवर्ष सुचारू रूप से किया जा रहा है। इसकी लोकप्रियता में वृद्धि करने हेतु अनेक महत्वपूर्ण संशोधन व सुझाव अमल में लाये गये। तानसेन संगीत समारोह का आयोजन उ0 अलाउद्दीन खान कला एवं संगीत कला अकादमी और मध्य प्रदेश के संस्कृति मंत्रालय द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित किया जाता है। गैर सरकारी, सामाजिक संगठन एवं संस्थाएँ भी इस समारोह के सफलतापूर्वक आयोजन में अपना सहयोग प्रदान करती हैं। प्रतिवर्ष आयोजित तानसेन समारोह में देश के मूर्धन्य गायकों एवं वादकों को कला प्रदर्शन हेतु आमंत्रित किया जाता है। समारोह में विभिन्न, धर्म सम्प्रदाय, जाति के संगीतज्ञ एक ही मंच पर संगीत कला का प्रदर्शन करते हैं। कलाकारों की प्रस्तुतियाँ अपने आप में अद्भुत, अद्वितीय तथा जनमानस के ह्रदय के तारों को झंकृत करने वाली होती हैं। उक्त प्रतिष्ठित मंच पर अपनी पूर्ण निष्ठा, लगन, भाव, के साथ–साथ अपनी बेमिसाल तैयारी कर कलाकार कला प्रदर्शन से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर उनके अन्तर्मन में बस जाते हैं। अपनी ह्रदयस्पर्शी मनमोहक संगीत प्रस्तुतियाँ देकर तथा समारोह का हिस्सा बनकर वे अपने आपको धन्य समझते हैं। कलाकारों को कला प्रस्तुति में अपनी कला के मूल्यांकन का अवसर भी मिलता है, और उनकी आर्थिक स्थिति भी मजबूत होती है। देश के विभिन्न नगरों से संगीत प्रेमी, विद्यार्थी तथा जनमानस तानसेन समारोह में आते हैं। समारोह में विभिन्न धर्म, जाति, सम्प्रदाय के श्रोता सारे सीमा सम्बन्धी विवादों को भुलाकर एक ही स्थान पर बैठकर संगीत का आनंद लेते हैं। उन रसिक श्रोताओं को विभिन्न घरानों के कलाकारों की कलाकारी, कला की बारीकियाँ तथा उनके गाने बजाने के ढंग को प्रत्यक्ष रूप से देखने एवं सुनने का अवसर मिलता है। ये समारोह संगीत प्रेमियों को ज्ञान देते हैं, दिशा दृष्टि देते हैं, रूचि जागृत करते हैं तथा संगीत सीखने के लिये प्रेरणा एवं प्रोत्साहन भी देते हैं। फलस्वरूप संगीत सीखने के इच्छुक लोग अच्छे गुरू के सान्निध्य में संगीत सीखते हैं तथा उसे कैरियर के रूप में चुनते हैं। समारोह की सूचना समाचार–पत्रों, इलेक्ट्रानिक–मीडिया, होर्डिंग्स आदि अनेक प्रचार–प्रसार के माध्यमों द्वारा जन–जन तक हर संभव पहुँचाई जाती है। इस प्रकार तानसेन समारोह के प्रतिवर्ष आयोजन से निर्विघ्न प्रवहमान संगीत की जीवन्त परम्परा का पीढ़ी दर पीढ़ी जनमानस में प्रचार–प्रसार हो रहा है।

तानसेन समारोह वर्ष 2015 तक चार दिन आयोजित होता था, परन्तु 2016 से यह पाँच दिन आयोजित किया जाने लगा है। इसमें पश्चिमी पारंपरिक संगीत का समावेश करते हुए ''विश्व संगीत समागम तानसेन समारोह'' कर दिया गया है। समारोह में देश के सभी घरानेदार तथा उत्तर एवं दक्षिण भारतीय संगीत के कलाकारों के साथ गत वर्ष से अन्तर्राष्ट्रीय कलाकारों को भी अपनी कला प्रस्तुति के लिए आमंत्रित किया जाने लगा है, यह एक अच्छी परम्परा की शुरूआत है। इससे विभिन्न देशों के संगीत को जानने व समझने का अवसर प्राप्त होगा। परस्पर देशों में संगीत कला का आदान–प्रदान होगा तथा संगीत का प्रचार–प्रसार भारतवर्ष के साथ ही अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी होगा।

ऐसा माना जाता है कि तानसेन के मकबरे के समीप एक इमली का वृक्ष है, जिसकी पत्तियाँ गायक इस विश्वास से खाते हैं

कि उनके कंठ–स्वर में सुरीलापन आ जाये और उसे प्रसाद के रूप में भी बाहर ले जाते हैं।

तानसेन समारोह में उच्चकोटि के कलाकारों को उनके संगीत के क्षेत्र में अमूल्य योगदान के लिये सन् 2000 से प्रतिवर्ष तानसेन सम्मान से अलंकृत किया जा रहा है। जिनके नाम इस प्रकार हैं– उस्ताद अब्दुल हलीम ज़ाफर खान, उ0 अमजद अली खान, नियाज़ अहमद खान, पंडित दिनकर कायकिनी, पंडित शिव कुमार शर्मा, मालिनी राजुरकर, सुलोचना ब्रहस्पति, पं0 गोकुलोत्सव महाराज, उ0 गुलाम मुस्तफा खान, अजय पोहनकर, सविता देवी, राजन–साजन मिश्रा, विश्वमोहन भट्ट, प्रभाकर कारेकर, अजय चक्रवर्ती, पं0 लक्ष्मण कृष्ण राव पंडित, पं0 डालचन्द्र शर्मा।

तानसेन संगीत समारोह के मुख्य अंशों का प्रसारण समय–समय पर आकाशवाणी द्वारा किया जाता है, जिससे श्रोताओं को इस समारोह की प्रस्तुति को सुनने का अवसर मिलता है। इसके अतिरिक्त टी0वी0 चैनल के माध्यम से तानसेन समारोह की मुख्य झलकियाँ भी दिखायी जाती हैं। संगीत प्रेमियों को समारोह की विभिन्न सांगीतिक गतिविधियों को देखने व सुनने दोनों का लाभ मिलता है। संगीत प्रेमी कलाकारों के कार्यक्रमों को समारोह स्थल पर रिकार्ड कर समय–समय पर सुनते हैं, और उससे सीखते हैं। इस प्रकार संगीत का प्रचार–प्रसार देश के कोने–कोने में हो रहा है।

तानसेन समारोह के आयोजकों ने गत वर्ष इसमें ''वादी–संवादी'', ''धरोहर'' ''दस्तावेज'' और ''रंग संभावना'' जैसी इतिहास रचने वाली अनुसांगिक गतिविधियों को जोड़कर जो सराहनीय कार्य किया है, वह संगीत कला प्रेमियों के लिए सौभाग्य का विषय है।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि भारतीय संस्कृति की अमूल्य धरोहर शास्त्रीय संगीत को जन–जन में लोकप्रिय बनाने, रूचि जागृत करने, उसका प्रचार–प्रसार करने तथा समृद्धशाली बनाने में तानसेन समारोह की महत्वपूर्ण भूमिका है।

सन्दर्भ :

(1) प्रो0 शर्मा, स्वतन्त्र : भारतीय संगीत एक ऐतिहासिक विश्लेषण, प्रकाशक अनुभव पब्लिशिंग हाउस, इलाहाबाद।

***(2)** गर्ग, लक्ष्मी नारायण : निबन्ध संगीत, प्रकाशक संगीत कार्यालय हाथरस।*

***(3)** डॉ0 भार्गव, सत्या : राष्ट्रीय एकता में संगीत की भूमिका, संजय प्रकाशन नई दिल्ली।*

***(4)** गोवर्धन, शान्ति : संगीत शास्त्र दर्पण, पाठक पब्लिकेशन, इलाहाबाद।*

***(5)** http://m.jagranjosh.com*

***(6)** http://tansensamaroh.com/aboutfestival.php*

***(7)** http://www.google.co.in/search?q=Tansen+Samaroh+pics*

❁ ❁

UGC -
APPROVED - JOURNAL

UGC Journal Details

Name of the Journal :	Research Link
ISSN Number :	09731628
e-ISSN Number :	
Source:	UNIV
Subject:	Accounting;Anthropology;Business and International Management;Economics, Econometrics and Finance(all);Education;Environmental Science(all);Finance;Geography, Planning and Development;Law;Political Science a;Social Sciences(all)
Publisher:	Research Link
Country of Publication:	India
Broad Subject Category:	Arts & Humanities;Multidisciplinary;Social Science

Print

शोध-पत्र भेजने संबंधी नियम

(1) शोध-पत्र **1500-1700 शब्दों से अधिक नहीं** होना चाहिए।

(2) **हिन्दी एवं मराठी माध्यम के शोधपत्रों को कृतिदेव 10** (Kruti Dev 010) में टाईप करवाकर 'पेजमेकर 6.5' में भेजें।

(3) **पंजाबी माध्यम के शोधपत्रों को अनमोल लिपि** (AnmolLipi) या **अमृत बोली** (Amritboli) या **जॉय** (Joy) में टाईप करवाकर 'पेजमेकर 6.5' में भेजें।

(4) अंग्रेजी माध्यम के शोधपत्र टाईम्स न्यू रोमन (Times New Roman), एरियल फोंट (Arial) में टाईप करवाकर 'पेजमेकर 6.5' या 'माइक्रोसाफ्ट वर्ड' में भेजे जा सकते हैं।

(4) शोधपत्र की विधि - (1) शीर्षक (2) एबस्ट्रेक्ट (3) की-वर्ड्स (5) प्रस्तावना/प्रवेश (5) उद्देश्य (6) शोध परिकल्पना (7) शोध प्रविधि एवं क्षेत्र (8) सांख्यिकीय तकनीक (9) विवेचन या विश्लेषण (10) सुझाव (11) निष्कर्ष एवं (12) संदर्भ ग्रंथ सूची।

(6) संदर्भ ग्रंथ सूची इस प्रकार दें -

For Books :

(1) Name of Writer, "Name of Book", Publication, Place of Publication, Year of Publication, Page Number/numbers.

For Journals :

(2) Name of Writer, "Title of Article", Name of Journal, Volume ....., Issue ....., Page Numbers.

Web references :

http://utc.iath.virginia.edu/interpret/exhibits/hill/hill.html

(7) **गुजराती माध्यम** के शोधपत्र **हरेकृष्णा (Harekrishna), टेराफोंट वरुण (Terafont Varun), टेराफोंट आकाश (Terafont Aaksah)** में टाईप करवाकर 'पेजमेकर 6.5' में भेजे जा सकते हैं।

(8) शोधपत्र की साफ्टकॉपी रिसर्च लिंक के ई-मेल आईडी researchlink@yahoo.co.in पर भेजने के बाद हॉर्डकॉपी, शोधपत्र के मौलिक होने के घोषणा पत्र के साथ हस्ताक्षर कर 'रिसर्च लिंक' के कार्यालय को प्रेषित करें।

❁ ❁